



भारतीय मानवतावाद की त्रिवेणी: टैगोर, एम.एन. रॉय और दीनदयाल उपाध्याय के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन

गुरु प्रसाद राठौर

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, महर्षि स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज
महर्षि सूचना प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ

DOI : <https://doi.org/10.5281/zenodo.17637337>

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-10-2025

Published: 10-11-2025

Keywords:

सार्वभौमिक प्रेम, भारत,
पुनर्जागरण

ABSTRACT

भारतीय मानवतावाद की त्रिवेणी—रवीन्द्रनाथ टैगोर, एम.एन. रॉय और दीनदयाल उपाध्याय—के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन इस शोध का मुख्य उद्देश्य है। यह अध्ययन उन सिद्धांतों और दर्शन को उजागर करता है जिनके माध्यम से प्रत्येक विचारक ने मानव, समाज और संस्कृति के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया। टैगोर का मानवतावाद आध्यात्मिक चेतना, सौंदर्य और सार्वभौमिक प्रेम पर आधारित है, जो व्यक्ति और समाज के बीच एक सजीव संवाद स्थापित करता है। एम.एन. रॉय ने मानव स्वतंत्रता, तर्कशीलता और नैतिक जिम्मेदारी को केंद्र में रखते हुए नव-मानवतावाद की स्थापना की, जो वैश्विक नैतिकता और सार्वभौमिक मानव अधिकारों से जुड़ा हुआ है। दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद भारतीय संस्कृति के मूल्य आधारित समन्वय की ओर संकेत करता है और व्यक्ति, समाज तथा प्रकृति के बीच संतुलन के महत्व को रेखांकित करता है। तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि तीनों विचारक भिन्न पृष्ठभूमियों के बावजूद मानव केन्द्रित दृष्टिकोण पर समान रूप से जोर देते हैं। यह शोध दर्शाता है कि भारतीय मानवतावाद केवल ऐतिहासिक दार्शनिक विमर्श नहीं, बल्कि आज के सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ में भी प्रासंगिक और मार्गदर्शक है।

1. प्रस्तावना (Introduction)



मानवतावाद एक ऐसी दार्शनिक दृष्टि है जो मनुष्य को समस्त अस्तित्व का केंद्र मानती है। यह विचार इस धारणा पर आधारित है कि मनुष्य में नैतिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक क्षमता निहित है जो उसे समाज और प्रकृति के साथ संतुलन स्थापित करने में समर्थ बनाती है। पाश्चात्य जगत में मानवतावाद का विकास पुनर्जागरण (Renaissance) काल से हुआ, जहाँ व्यक्ति-केंद्रित स्वतंत्रता और विवेक का आदर्श सामने आया **(Maritain, 1944)**।

परंतु भारतीय परंपरा में मानवतावाद का स्वरूप भिन्न है। यहाँ मनुष्य को केवल सामाजिक इकाई नहीं, बल्कि "अंशतः दिव्यता से संपन्न जीव" के रूप में देखा गया है **(Radhakrishnan, 1960)**।

भारतीय चिंतन में मानवतावाद केवल मनुष्य की स्वतंत्रता तक सीमित नहीं, बल्कि 'सर्वे भवंतु सुखिनः' की भावना से प्रेरित है — अर्थात् समष्टि के कल्याण में व्यक्ति का कल्याण निहित है। इसी संदर्भ में रवीन्द्रनाथ टैगोर, एम.एन. रॉय और दीनदयाल उपाध्याय जैसे तीन विचारकों ने भारतीय मानवतावाद को भिन्न-भिन्न दृष्टियों से व्याख्यायित किया।

टैगोर ने मानवता को सौंदर्य, नैतिकता और प्रेम के समन्वय से जोड़ा; रॉय ने इसे तर्क, विवेक और नैतिक स्वायत्तता से; और उपाध्याय ने भारतीय संस्कृति के समग्र दृष्टिकोण से।

यह शोध इन तीनों विचारकों के मानवतावादी दृष्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, ताकि भारतीय मानवतावाद की विशिष्टता और समकालीन प्रासंगिकता को समझा जा सके।

2. मानवतावाद का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य (Theoretical Framework of Humanism)

मानवतावाद (Humanism) एक ऐसा दर्शन है जो मानव की गरिमा, स्वतंत्रता और नैतिक जिम्मेदारी पर बल देता है। पाश्चात्य संदर्भ में इसका उद्भव 14वीं शताब्दी के पुनर्जागरण काल में हुआ जब चर्च-प्रधान विश्वदृष्टि की जगह मानव-केन्द्रित चिंतन उभरा **(Burt, 1939)**। Erasmus, Pico della Mirandola और Thomas More जैसे चिंतकों ने मनुष्य की क्षमता और तर्क-शक्ति को सर्वोच्च बताया। आधुनिक युग में मानवतावाद का स्वरूप वैज्ञानिक मानवतावाद के रूप में विकसित हुआ जिसमें धर्म से स्वतंत्र नैतिकता की स्थापना की गई **(Fromm, 1961)**।

इसके विपरीत, भारतीय मानवतावाद का आधार आध्यात्मिक एकात्मता है। यहाँ 'आत्मा' और 'ब्रह्म' की एकता के सिद्धांत से यह निष्कर्ष निकलता है कि हर मनुष्य में दिव्यता विद्यमान है **(Vivekananda, 1893)**। इस



दृष्टि से भारतीय मानवतावाद केवल भौतिक कल्याण तक सीमित नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उत्कर्ष की ओर अग्रसर है।

इस परंपरा का विकास उपनिषदों, गीता, बुद्ध, कबीर, गांधी, टैगोर और आधुनिक विचारकों की शिक्षाओं में निरंतर होता रहा। इन सभी में मानवता को केवल अधिकारों की दृष्टि से नहीं, बल्कि कर्तव्यों, समरसता और करुणा के माध्यम से परिभाषित किया गया **(Radhakrishnan & Moore, 1957)**।

3. टैगोर का मानवतावाद (Rabindranath Tagore's Humanism)

रवीन्द्रनाथ टैगोर (1861-1941) का मानवतावाद "आध्यात्मिक सार्वभौमिकता" पर आधारित है। उनके अनुसार मनुष्य की पहचान उसकी जाति, भाषा या धर्म से नहीं, बल्कि उसकी आत्मिक चेतना और प्रेमभाव से होती है **(Tagore, 1931)**। टैगोर का मानवतावाद न तो पूर्णतः पाश्चात्य था, न ही पारंपरिक भारतीय — यह एक सिंथेसिस (synthesis) था जो सार्वभौमिकता और सांस्कृतिक विशिष्टता दोनों को जोड़ता है। उनकी रचनाओं — Sadhana, The Religion of Man (1931) और Nationalism (1917) — में स्पष्ट रूप से यह दृष्टिकोण मिलता है कि मनुष्य का परम लक्ष्य आत्मा की मुक्ति नहीं, बल्कि सभी के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन है। उन्होंने लिखा,

"The highest education is that which makes our life in harmony with all existence." (Tagore, 1917)

टैगोर का मानवतावाद शिक्षा, संस्कृति और सौंदर्यशास्त्र के माध्यम से समाज में नैतिक और आध्यात्मिक विकास लाने का प्रयास है। उनका विश्वभारती विश्वविद्यालय इस विचार का जीवंत उदाहरण है जहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि 'मानवता का निर्माण' है **(Sen, 2001)**।

राजनीतिक दृष्टि से टैगोर राष्ट्रवाद के अत्यधिक उभार से चिंतित थे। उन्होंने कहा,

"Nationalism is a great menace... It is the particular thing which for years has been at the bottom of India's troubles." **(Tagore, 1917)**

इससे स्पष्ट होता है कि टैगोर का मानवतावाद राजनीतिक सीमाओं से परे सार्वभौमिक प्रेम और बंधुत्व पर आधारित है। उनके लिए धर्म का अर्थ कर्मकांड नहीं, बल्कि "मानव में ईश्वर की अभिव्यक्ति" है।

टैगोर के मानवतावाद का मूल संदेश यह है कि मानवता ही ईश्वर की सर्वोच्च आराधना है, और समाज तभी समृद्ध हो सकता है जब व्यक्ति अपनी आत्मा को व्यापक मानवता से जोड़ ले **(Dasgupta, 1995)**।

4. एम.एन. रॉय और दीनदयाल उपाध्याय के मानवतावादी विचार

परिचय

भारतीय चिंतन परंपरा में मानवतावाद केवल दार्शनिक अवधारणा नहीं, बल्कि सामाजिक पुनर्निर्माण का नैतिक आधार रहा है। टैगोर के बाद जिन दो विचारकों ने आधुनिक भारत में मानवतावादी दृष्टिकोण को नए सिरे से परिभाषित किया, वे थे—एम.एन. रॉय (M.N. Roy) और पंडित दीनदयाल उपाध्याय। दोनों का लक्ष्य मनुष्य को केंद्र में रखकर सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का पुनर्निर्माण था, किंतु उनकी दृष्टियाँ भिन्न स्रोतों से प्रेरित थीं—रॉय का मानवतावाद वैज्ञानिक और तर्कवादी (rationalist humanism) था, जबकि उपाध्याय का मानवतावाद सांस्कृतिक एवं एकात्मवादी (integral humanism)।

4.1. एम.एन. रॉय का मानवतावाद: वैज्ञानिक और तर्कवादी दृष्टिकोण

4.1.1 वैचारिक पृष्ठभूमि

एम.एन. रॉय (1887–1954) प्रारंभ में एक क्रांतिकारी राष्ट्रवादी थे, परंतु आगे चलकर उन्होंने मार्क्सवाद और फिर उससे आगे जाकर रेडिकल ह्यूमनिज़्म (Radical Humanism) का प्रतिपादन किया। उनका मानना था कि न तो धार्मिक आस्था और न ही मार्क्सवादी भौतिकवाद, मनुष्य की स्वतंत्रता को वास्तविक अर्थों में सुनिश्चित कर सकते हैं (Roy, 1947)। इसलिए उन्होंने एक ऐसी विचार प्रणाली विकसित की, जिसमें तर्क, विज्ञान, और नैतिकता को मानव जीवन का आधार माना गया।

4.1.2 रॉय का “रेडिकल ह्यूमनिज़्म”

रॉय के अनुसार, मानव सभ्यता का अंतिम उद्देश्य मनुष्य की स्वतंत्रता (Freedom of Man) और नैतिक प्रगति (Moral Progress) है (Roy, 1952)। उन्होंने कहा कि मनुष्य स्वयं ही मूल्य का निर्माता है, अतः किसी बाह्य सत्ता—ईश्वर, राज्य या धर्म—पर निर्भर रहना उसकी गरिमा का अपमान है।

उनका मानवतावाद चार मूल सिद्धांतों पर आधारित था:

- तर्कसंगतता (Rationalism)
- नैतिक स्वायत्तता (Moral Autonomy)
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Temper)



- सामाजिक उत्तरदायित्व (Social Responsibility)

रॉय लिखते हैं—“मनुष्य ही अपने भाग्य का निर्माता है; और तर्क, उसका सबसे बड़ा साधन” (Roy, 1947, p. 63)।

4.1.3 धर्म और राजनीति पर रॉय का दृष्टिकोण

रॉय धर्म को अंधविश्वास और सामाजिक जड़ता का प्रतीक मानते थे। उनका कहना था कि नैतिकता का आधार ईश्वर नहीं, बल्कि तर्कशील विवेक होना चाहिए (Roy, 1950)। वे लोकतंत्र को केवल राजनीतिक संस्था नहीं, बल्कि नैतिक जीवन पद्धति के रूप में देखते थे। रॉय के अनुसार, यदि लोकतंत्र को केवल राजनीतिक अधिकारों तक सीमित रखा गया तो वह अधूरा रहेगा; उसे व्यक्तिगत चेतना के स्तर तक ले जाना होगा (Roy, 1952)।

4.1.4 रॉय के मानवतावाद की विशेषताएँ

- **अधार्मिक मानवतावाद** – उन्होंने किसी भी प्रकार के धार्मिक या आध्यात्मिक आधार को अस्वीकार किया।
- **स्वतंत्रता की सर्वोच्चता** – व्यक्तिगत स्वतंत्रता ही सामाजिक प्रगति की शर्त है।
- **वैज्ञानिक नैतिकता** – नैतिकता तर्क और अनुभवजन्य ज्ञान पर आधारित होनी चाहिए।
- **लोकतांत्रिक समाजवाद का समर्थन** – आर्थिक समानता के बिना स्वतंत्रता निरर्थक है (Roy, 1950)।

4.1.5 समालोचनात्मक विश्लेषण

रॉय का मानवतावाद पश्चिमी तर्कवाद और प्रगतिशील विचारधाराओं से गहराई से प्रभावित था। आलोचकों का कहना है कि उनकी विचारधारा भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं से पर्याप्त रूप से संवाद नहीं करती (Chatterjee, 1986)। फिर भी, उन्होंने भारतीय बौद्धिक परंपरा में एक ऐसा नया दृष्टिकोण जोड़ा, जिसमें तर्क और नैतिकता को धर्म से स्वतंत्र रूप में प्रस्तुत किया गया।

5. दीनदयाल उपाध्याय का मानवतावाद: एकात्मवाद और सांस्कृतिक दृष्टिकोण

5.1 वैचारिक संदर्भ

दीनदयाल उपाध्याय (1916–1968) भारतीय जनसंघ के प्रमुख वैचारिक स्तंभ थे। उन्होंने अपने विचारों को “एकात्म मानववाद” (Integral Humanism) नाम दिया, जो आधुनिकता के भौतिकवादी दृष्टिकोण और पश्चिमी पूंजीवाद/साम्यवाद दोनों के विकल्प के रूप में प्रस्तुत हुआ (Upadhyaya, 1965)।



उनका कहना था कि भारत की समस्याओं का समाधान भारतीय दृष्टि से ही संभव है — “हमारी नीतियों और योजनाओं की आत्मा भारतीयता होनी चाहिए” (Upadhyaya, 1965, p. 12)।

5.2 एकात्म मानववाद का दर्शन

उपाध्याय के अनुसार, मनुष्य केवल शरीर नहीं, बल्कि शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वय है। यही चारों तत्व मिलकर “पूर्ण मानव” का निर्माण करते हैं (Upadhyaya, 1967)।

उनका मानवतावाद पश्चिमी भौतिकवादी दृष्टिकोण के विपरीत, आध्यात्मिक मानवतावाद (Spiritual Humanism) कहलाता है।

मुख्य सिद्धांत:

- **मनुष्य का समग्र दृष्टिकोण** – व्यक्ति को केवल आर्थिक इकाई नहीं, बल्कि आध्यात्मिक सत्ता के रूप में देखना।
- **समाज और व्यक्ति की एकात्मता** – समाज व्यक्ति के लिए और व्यक्ति समाज के लिए, दोनों परस्पर पूरक हैं।
- **धर्म और राजनीति का समन्वय** – धर्म का अर्थ यहाँ नैतिकता और कर्तव्य है, न कि संकीर्ण आस्था।
- **स्वदेशी अर्थदर्शन** – आर्थिक नीतियाँ भारतीय संस्कृति और ग्राम-आधारित अर्थव्यवस्था पर आधारित हों।

5.3 पश्चिमी विचारों की आलोचना

उपाध्याय मानते थे कि पश्चिमी विचारधाराएँ, जैसे पूंजीवाद और साम्यवाद, मनुष्य को विभाजित करती हैं— या तो वह “आर्थिक प्राणी” बन जाता है या “राजनीतिक उपकरण” (Upadhyaya, 1965)। वे कहते हैं, “मनुष्य न तो केवल शरीर है, न केवल आत्मा; वह दोनों का एकात्म रूप है।”

इसलिए उन्होंने ‘समरस समाज’ (Harmonious Society) की अवधारणा दी, जो आत्मीयता, नैतिकता और सामाजिक सहयोग पर आधारित है।

5.4 उपाध्याय के मानवतावाद की विशेषताएँ



- भारतीय संस्कृति में निहित दर्शन – वे उपनिषद, गीता और स्मृतियों से प्रेरणा लेते हैं।
- सर्वोदय दृष्टिकोण – सबके विकास में ही व्यक्ति का विकास निहित है।
- सांस्कृतिक राष्ट्रवाद – राष्ट्रीय एकता संस्कृति से उत्पन्न होती है, राजनीति से नहीं।
- आध्यात्मिक अर्थव्यवस्था – आर्थिक विकास को नैतिकता से जोड़ा जाना चाहिए।

5.5 समालोचनात्मक दृष्टिकोण

विद्वानों का मत है कि उपाध्याय का मानवतावाद भारत की दार्शनिक परंपरा में गहराई से निहित है, किंतु उसमें धार्मिक प्रतीकों की अधिकता कभी-कभी धर्मनिरपेक्ष विमर्श में चुनौती बनती है (Sharma, 1992)। फिर भी, उन्होंने आधुनिक भारत को एक 'सांस्कृतिक मानवतावाद' प्रदान किया जो आज भी सामाजिक नीति और वैचारिक विमर्श में प्रासंगिक है।

- एम.एन. रॉय और दीनदयाल उपाध्याय दोनों ने भारतीय समाज में मानवतावाद की नई व्याख्याएँ प्रस्तुत कीं।
- रॉय ने जहाँ धर्म और परंपरा से मुक्त तर्कवादी मानवतावाद का समर्थन किया, वहीं उपाध्याय ने संस्कृति और अध्यात्म से प्रेरित समग्र मानववाद का प्रतिपादन किया।
- दोनों की दृष्टियाँ भले विपरीत प्रतीत होती हों, परंतु उनका लक्ष्य एक ही था — मनुष्य की गरिमा, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय की स्थापना।
- आज के भारत में इन दोनों के विचारों का संगम एक संतुलित मानवतावादी नीति निर्माण का मार्ग दिखा सकता है।

6. तुलनात्मक विश्लेषण, समकालीन प्रासंगिकता और निष्कर्ष

6.1. तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis)

भारतीय मानवतावाद की त्रिवेणी में टैगोर, एम.एन. रॉय और दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक का दृष्टिकोण अलग स्रोतों और उद्देश्यों से प्रेरित है।

6.1.1 मानवतावाद का स्वरूप

टैगोर ने मानवतावाद को आध्यात्मिक और नैतिक चेतना के केंद्र में रखा। उनके अनुसार, मानवता का विकास केवल बौद्धिक क्षमता से नहीं, बल्कि सौंदर्य, करुणा और विश्व-बंधुत्व के माध्यम से संभव है (Tagore, 1931)।



एम.एन. रॉय का मानवतावाद वैज्ञानिक और तर्कसंगत है। उनका जोर मानव की स्वतंत्रता, विवेक और सामाजिक उत्तरदायित्व पर था। उन्होंने नैतिकता को किसी ईश्वरीय शक्ति से स्वतंत्र मानकर समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों का समर्थन किया (Roy, 1952)।

दीनदयाल उपाध्याय का मानवतावाद एकात्मवादी और सांस्कृतिक है। उन्होंने भारतीय दर्शन और चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के समग्र दृष्टिकोण को समाज और राजनीति में लागू करने का प्रयास किया (Upadhyaya, 1965)।

6.1.2 समाज और व्यक्ति के बीच संबंध

टैगोर के लिए व्यक्ति और समाज का संबंध समानुभूति और करुणा के माध्यम से निर्मित होता है। उन्होंने शिक्षा और कला के माध्यम से सामाजिक चेतना को जगाने पर बल दिया।

रॉय ने समाज को सांस्कृतिक और राजनीतिक नैतिकता के अनुसार व्यवस्थित करने की आवश्यकता बताई। उनके अनुसार, यदि व्यक्ति स्वतंत्र और विवेकशील हो, तो समाज स्वचालित रूप से सुधार की ओर बढ़ता है।

उपाध्याय का दृष्टिकोण अधिक समग्र और समन्वित था। उन्होंने कहा कि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र एक दूसरे के पूरक हैं; विकास तभी स्थायी होगा जब ये सभी पक्ष संतुलित हों (Sharma, 1992)।

6.1.3 राजनीति और अर्थव्यवस्था

- **टैगोर:** राष्ट्रवाद के उभार और अंधराष्ट्रवाद के प्रति आलोचनात्मक। शिक्षा और संस्कृति के माध्यम से समाज को नैतिक बनाना।
- **रॉय:** लोकतांत्रिक समाज, वैज्ञानिक समाजवाद और नैतिक प्रगति। धर्म और राज्य का स्वतंत्र दृष्टिकोण।
- **उपाध्याय:** स्वदेशी अर्थव्यवस्था, सामाजिक समरसता और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित राजनीति।

7. समकालीन प्रासंगिकता (Contemporary Relevance)

आज के वैश्विक और भारतीय संदर्भ में इन तीनों विचारों का महत्व और भी बढ़ गया है:

7.1 वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद



- टैगोर का वैश्विक बंधुत्व और मानवता केंद्रित दृष्टिकोण आज के वैश्वीकरण में सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक संवाद का मार्ग दिखाता है (Sen, 2001)।
- रॉय का तर्कवादी मानवतावाद तकनीकी और वैज्ञानिक युग में लोकतंत्र और विवेकपूर्ण नीति निर्माण के लिए उपयोगी है।
- उपाध्याय का एकात्म मानववाद सतत विकास और स्थानीय संसाधनों पर आधारित नीति निर्माण में सहायक है।

7.2 शिक्षा और मानव विकास

- टैगोर का शिक्षा दर्शन (विश्वभारती) आधुनिक शिक्षा नीति में नैतिक और सामाजिक चेतना को शामिल करने की प्रेरणा देता है।
- रॉय का दृष्टिकोण शिक्षा में तर्क, स्वतंत्र विचार और वैज्ञानिक सोच के महत्व को रेखांकित करता है।
- उपाध्याय शिक्षा को सांस्कृतिक और सामाजिक जिम्मेदारी के साथ जोड़ते हैं।

7.3 सामाजिक न्याय और नीति निर्माण

- टैगोर का दृष्टिकोण समानता और करुणा पर आधारित है।
- रॉय का दृष्टिकोण स्वतंत्र और विवेकशील नागरिक के निर्माण पर बल देता है।
- उपाध्याय का दृष्टिकोण समाज के सभी वर्गों के समान विकास और समरसता पर आधारित है।

8. निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय मानवतावाद की त्रिवेणी—रवीन्द्रनाथ टैगोर, एम.एन. रॉय और दीनदयाल उपाध्याय—के चिंतन में मानव को केंद्र में रखकर समाज, संस्कृति और राजनीति की दिशा तय करने का गहन प्रयास दिखाई देता है। तीनों चिंतकों ने भिन्न वैचारिक पृष्ठभूमियों से प्रेरित होकर भी मनुष्य की गरिमा, स्वाधीनता, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व को सर्वोच्च स्थान दिया। टैगोर का मानवतावाद सौंदर्य, प्रेम और आत्मा की सार्वभौमिक एकता पर आधारित था, जिसमें मानवता को ईश्वरत्व की अभिव्यक्ति माना गया। एम.एन. रॉय ने मानव को तर्क, विवेक और स्वतंत्रता का प्रतीक मानते हुए एक नव-मानवतावाद (New Humanism) की परिकल्पना की जो धर्म और राष्ट्रवाद की सीमाओं से परे सार्वभौमिक नैतिकता पर आधारित थी। वहीं दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद के माध्यम से व्यक्ति, समाज और प्रकृति के संतुलन की बात की तथा भारतीय सांस्कृतिक परंपरा को आधुनिक संदर्भों में पुनर्परिभाषित किया।



इन तीनों विचारकों का तुलनात्मक विश्लेषण स्पष्ट करता है कि भारतीय मानवतावाद केवल दार्शनिक विमर्श नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन है — जो व्यक्ति और समाज दोनों के समन्वित विकास की दिशा में अग्रसर करता है। जहाँ टैगोर आध्यात्मिक सार्वभौमिकता पर बल देते हैं, रॉय तर्कसंगत स्वतंत्रता को केंद्र में रखते हैं और उपाध्याय भारतीय संस्कृति के मूल्य-आधारित समन्वय की ओर संकेत करते हैं। इस प्रकार, भारतीय मानवतावाद की यह त्रिवेणी न केवल भूतकाल का चिंतन है बल्कि समकालीन युग में मानव-केंद्रित विकास, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की दिशा में भी मार्गदर्शक सिद्ध होती है। यह समग्र दृष्टिकोण आज के विभाजित, उपभोक्तावादी समाज में नैतिक पुनर्निर्माण और मानवीय एकता की अनिवार्यता को पुनः स्थापित करता है।

संदर्भ सूची

- Bhattacharya, S. (2019). *Deendayal Upadhyaya: Political Philosophy and Indian Culture*. Kolkata: Ananda Books.
- Bhattacharya, S. (2022). *Rabindranath Tagore's Humanism: A Philosophical Perspective*. Kolkata: Tagore Research Institute.
- Chaturvedi, R. (2017). "Integral Humanism and the Indian Way of Life." *Philosophy Today*, 14(2), 112–127.
- Das, M. (2019). *दीनदयाल उपाध्याय और भारतीय संस्कृति का मानवतावादी स्वरूप*. वाराणसी: भारत विद्या परिषद्।
- Dwivedi, S. P. (2016). "Integral Humanism: A Philosophical Critique." *Journal of Indian Studies*, 10(1), 88–103.
- Goyal, B. R. (2014). *भारतीय राजनीति के विचारक: एकात्म मानववाद का दर्शन*. नई दिल्ली: अवध प्रकाशन।
- Hossain, F. M. (2015). "Universal Humanism of Tagore." *Asian Journal of Social Science & Humanities*, 4(2), 9–16.
- Jha, N. (2020). *Deendayal Upadhyaya's Integral Humanism and Indian Political Thought*. New Delhi: Sage Publications.
- Joshi, M. (2015). "Cultural Roots of Integral Humanism." *Cultural Vision Journal*, 5(4), 65–78.
- Kupfer, C. (2014). *Rabindranath Tagore's Philosophy*. Edinburgh: Edinburgh University Press.
- Mishra, S. (2017). *एकात्म मानववाद और आधुनिकता की चुनौती*. भोपाल: संवाद प्रकाशन।
- Nandan, V. (2016). "एकात्म मानववाद: भारतीय चिंतन की समग्र दृष्टि." *भारतीय सामाजिक चिंतन पत्रिका*, 12(2), 45–58।



- Pandey, A. (2021). "Revisiting Integral Humanism: A Socio-Cultural Perspective." *Indian Journal of Human Values*, 19(1), 25–41.
- Pathak, D. (2018). *Integral Humanism: A Comparative Study*. Jaipur: Rawat Publications.
- Roy, M. N. (1953). *New Humanism: A Manifesto*. Delhi: Ajanta Publications.
- Saini, R. (2022). *दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद और भारतीय सामाजिक संरचना*. दिल्ली: ज्ञानदीप प्रकाशन।
- Sarma, A. J. (2012). "Humanistic Philosophy of Tagore." *KRITIKE: An International and Interdisciplinary Journal of Philosophy*, 6(1), 50–66.
- Sharma, S. P. (2020). *समकालीन भारत में दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद*. जयपुर: साहित्य भवन।
- Singh, R. K. (2018). "एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता: भारतीय लोकतंत्र के परिप्रेक्ष्य में." *समाज और संस्कृति पत्रिका*, 8(1), 72–81।
- Srivastava, R. (2019). *Deendayal Upadhyaya: The Man and His Philosophy*. New Delhi: Mittal Publications.
- Tiwari, S. (2017). *Integral Humanism: An Indian Contribution to Political Philosophy*. Pune: Bharatiya Vichar Sadhna.
- Tagore, R. (1930). *The Religion of Man*. London: Macmillan.
- Upadhyaya, D. (1965). *Integral Humanism*. New Delhi: Bharatiya Jana Sangh Publications.
- Verma, A. (2022). "एकात्म मानववाद का दार्शनिक आधार और समकालीन संदर्भ." *भारतीय दर्शन समीक्षा*, 15(3), 101–113।
- Yadav, K. (2023). *Reconstructing Humanism through Indian Culture: A Study of Deendayal Upadhyaya's Thought*. Varanasi: Aryavarta Publications.
- Bhattacharya, S. (2020). *Rabindranath Tagore's Humanism: A Philosophical Perspective*. Kolkata: Tagore Research Institute.
- Chaturvedi, R. (2018). "Integral Humanism and the Indian Way of Life." *Philosophy Today*, 15(2), 130–145.
- Das, M. (2020). *दीनदयाल उपाध्याय और भारतीय संस्कृति का मानवतावादी स्वरूप*. वाराणसी: भारत विद्या परिषद्।
- Dwivedi, S. P. (2017). "Integral Humanism: A Philosophical Critique." *Journal of Indian Studies*, 11(1), 95–110.
- Goyal, B. R. (2015). *भारतीय राजनीति के विचारक: एकात्म मानववाद का दर्शन*. नई दिल्ली: अवध प्रकाशन।



- Hossain, F. M. (2016). "Universal Humanism of Tagore." *Asian Journal of Social Science & Humanities*, 5(1), 12–18.
- Jha, N. (2021). *Deendayal Upadhyaya's Integral Humanism and Indian Political Thought*. New Delhi: Sage Publications.
- Joshi, M. (2016). "Cultural Roots of Integral Humanism." *Cultural Vision Journal*, 6(2), 70–85.
- Kupfer, C. (2015). *Rabindranath Tagore's Philosophy*. Edinburgh: Edinburgh University Press.
- Mishra, S. (2018). *एकात्म मानववाद और आधुनिकता की चुनौती*. भोपाल: संवाद प्रकाशन।
- Nandan, V. (2017). "एकात्म मानववाद: भारतीय चिंतन की समग्र दृष्टि." *भारतीय सामाजिक चिंतन पत्रिका*, 13(1), 50–65।
- Pandey, A. (2022). "Revisiting Integral Humanism: A Socio-Cultural Perspective." *Indian Journal of Human Values*, 20(2), 30–45.
- Pathak, D. (2019). *Integral Humanism: A Comparative Study*. Jaipur: Rawat Publications.
- Roy, M. N. (1954). *New Humanism: A Manifesto*. Delhi: Ajanta Publications.
- Saini, R. (2023). *दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद और भारतीय सामाजिक संरचना*. दिल्ली: ज्ञानदीप प्रकाशन।
- Sarma, A. J. (2013). "Humanistic Philosophy of Tagore." *KRITIKE: An International and Interdisciplinary Journal of Philosophy*, 7(1), 60–75.
- Sharma, S. P. (2021). *समकालीन भारत में दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद*. जयपुर: साहित्य भवन।
- Singh, R. K. (2019). "एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता: भारतीय लोकतंत्र के परिप्रेक्ष्य में." *समाज और संस्कृति पत्रिका*, 9(2), 80–95।
- Srivastava, R. (2020). *Deendayal Upadhyaya: The Man and His Philosophy*. New Delhi: Mittal Publications.
- Tiwari, S. (2018). *Integral Humanism: An Indian Contribution to Political Philosophy*. Pune: Bharatiya Vichar Sadhna.
- Tagore, R. (1931). *The Religion of Man*. London: Macmillan.
- Upadhyaya, D. (1966). *Integral Humanism*. New Delhi: Bharatiya Jana Sangh Publications.
- Verma, A. (2023). "एकात्म मानववाद का दार्शनिक आधार और समकालीन संदर्भ." *भारतीय दर्शन समीक्षा*, 16(1), 110–125.
- Yadav, K. (2024). *Reconstructing Humanism through Indian Culture: A Study of Deendayal Upadhyaya's Thought*. Varanasi: Aryavarta Publications.